B.A. (ODL) Sem-IV DSE2-C – II

मध्ययुगीन काव्य तथा नाटक साहित्य (हिंदी)

इकाई–I	रहीम के 20 दोहे **i)** भक्ति 1. समय दशा कुल देखि कै, सबै करत सनमान। रहिमन दीन अनाथ को, तुम बिन को भगवान।। 2. रहिमन को कोउ का करै, ज्वारी, चोर, लबार। जो पति राखनहार है, माखन चाखनहार।। 3. जेहि रहीम तन मन लियो, कियो हिए बिचभौन। तासों दुख सुख कहन की, रही बात अब कौन।। 4. गहि सरनागति राम की, भव सागर की नाव। रहिमन जगत उधार कर, और न कछु उपाव।। **ii)** संगति का प्रभाव 1. जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग। चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग।। 2. मूढ़ मंडली में सुजन, ठहरत नहीं बिसेषि। स्याम कंचन में सेत ज्यों, दूरि कीजिअत देखि।। 3. यह रहीम निज संग लै, जनमत जगत न कोय। बैर, प्रीति, अभ्यास, जस होत होत ही होय।। 4. रहिमन उजली प्रकृत को, नहीं नीच को संग करिया बासन कर गहे, कालिख लागत अंग।।